हिन्दी प्रकोष्ठ | संवादपत्र

भाषायी

प्रथम अंक 2023

विज्ञानं ब्रह्म

:: संपादक ::

डॉ. अमिताभ विक्रम द्विवेदी

(नोडल अधिकारी, हिन्दी प्रकोष्ठ)

:: सह-संपादक ::

मिलिन्द शुक्ल

(छात्र सचिव, हिन्दी प्रकोष्ठ)

:: संरक्षक ::

प्रो. प्रगति कुमार

(माननीय कुलपति)

।। श्री गणेशाय नमः ।।

हिन्दी प्रकोष्ठ

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय

कटड़ा, संघशासित जम्मू एवं कश्मीर,

भारत-182320

hindicell.smvdu.ac.in

hindi.cell@smvdu.ac.in

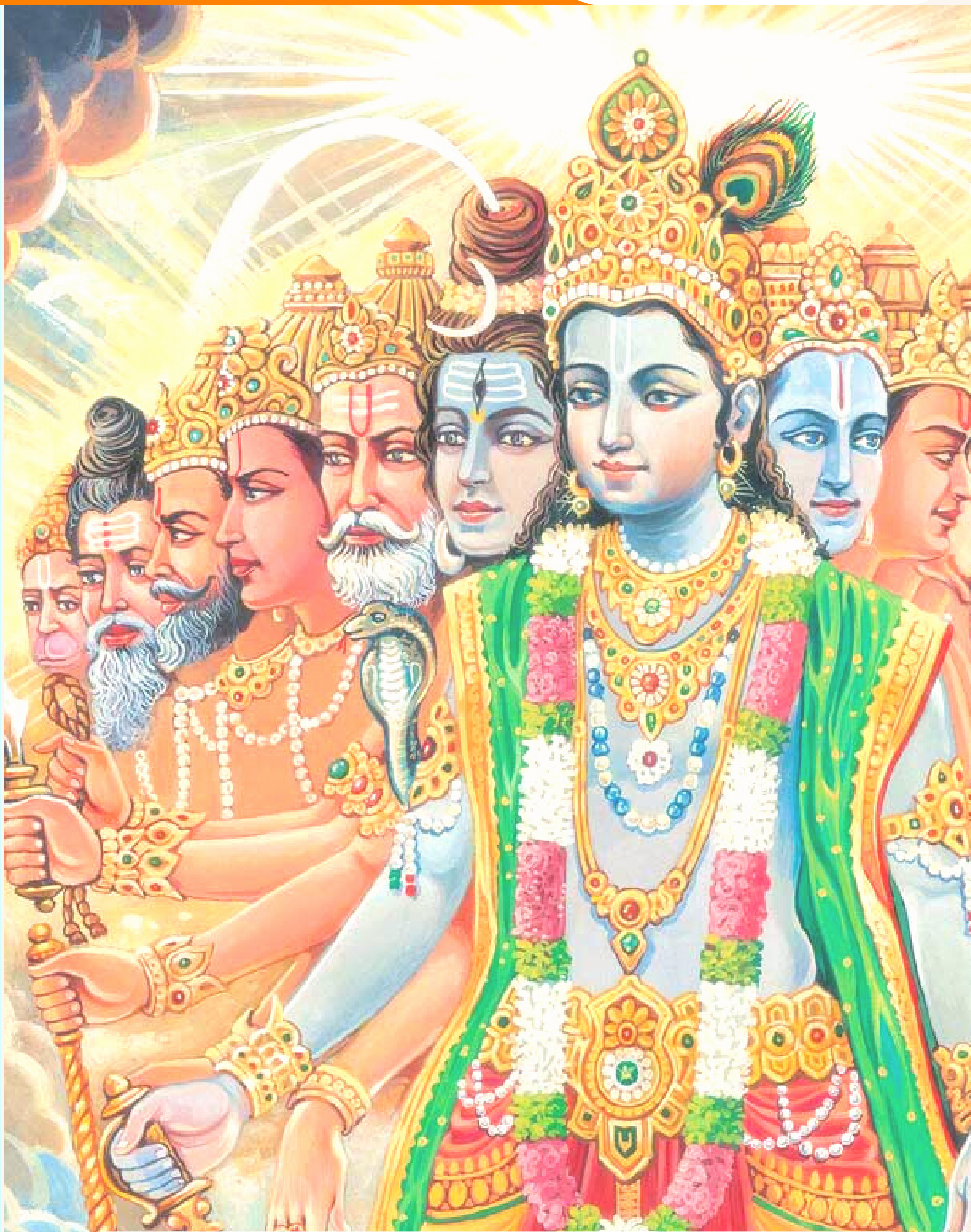

|| गीता ज्ञान ||

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् |

कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ||5|| (अध्याय 3)

निःसंदेह कोई भी मनुष्य किसी भी काल में क्षणमात्र भी बिना कर्म किए नहीं रहता; क्योंकि सारा मनुष्यसमुदाय प्रकृति जनित गुणों द्वारा परवश हुआ कर्म करने के लिये बाध्य किया जाता है।

अनुक्रमणिका

1. भाषिक विमर्श 1
2. भाषिक अनुप्रयोग 2
3. भाषिक समीक्षा 3
4. भाषा चिंतन 5
5. भाषा-बोली विशेष 7
6. हिन्दी साहित्य/व्याकरण 8
7. भाषा विज्ञान 9
8. लेख विशेष 10

अक्षरं ब्रह्म परमं

परम अक्षर ब्रह्म है।

जायदाद

फारसी में जा शब्द स्थान या जगह का बोधक है। इसका एक रूप जाय भी है जो स्थान या जगह के साथ-साथ 'आवास या निवास' अथवा 'आवास-स्थान या निवस-स्थान' का भी अर्थ देता है। इसी जाय में फारसी दाद' (= देना) जोड़ने से जायदाद शब्द बनता है जिसका मूलार्थ है- 'दी हुई जगह'। वस्तुतः फारसी में जायदाद का अर्थ- वह जगह, भूमि या ज़मीन है जो बादशाह द्वारा अपने अमीरों को सैन्यदल की स्थापना और उसके रख-रखाव पर होने वाले खर्च की पूर्ति के लिए दी जाती थी। कालांतर में इसका प्रयोग 'भूमि, भूसम्पत्ति, जागीर तथा आय स्रोत' के लिए होने लगा। फारसी में प्रचलित जायदाद के ये परवर्त्ती अर्थ हिन्दी-उर्दू में भी आए। वर्तमान में हिन्दी-उर्दू में जायदाद शब्द का प्रयोग (चल-अचल सम्पत्ति, भूमि, घर, वह सामान जिस पर किसी का पूर्ण स्वामित्व हो, धन-दौलत, मिल्कियत, व्यापारिक सामग्री, पैदावार तथा खड़ी फसल आदि के लिए होता है। जमीन-जायदाद जैसे समस्त पद भी धन-सम्पत्ति या वैभव के ही बोधक हैं।

फारसी में जायदाद के अतिरिक्त जा या जाय के आधार पर और भी अनेक शब्द बनते हैं जिनकी चर्चा यहाँ पर करना अनुचित नहीं होगा। उदाहरण के लिए जागीर ('जा-गीर' = धारण या ग्रहण की हुई जगह; वह जगह जिस पर किसी का कब्जा या अधिकार हो) शब्द लिया जा सकता है। इसमें प्रयुक्त 'गीर' का अर्थ 'धारण करना है। फारसी के आलमगीर (संसार को धारण करने वाला) राहगीर (जिसने राह धारण कर ली हो या रास्ता पकड़ रखा हो) तया पनागीर/पनाहगीर (बाजार, मेला) आदि शब्दों में यही गीर है। जा से ही जावर ("जा-वर"= जिसने किसी जगह या स्थान को ले रखा हो या उस पर अधिकार कर रखा हो), जारो (मूलतः जा-रोव जगह साफ करने वाला अर्थात् झाड़ू) तथा जा-बजा (एक स्थान से दूसरे स्थान पर, जगह-जगह, यहाँ-वहाँ) आदि शब्द बनते हैं। इसी प्रकार जा के रूपांतरण जाय से जायबाश' (= रहने की जगह अर्थात् घर, निवास), जायगाह (= निवास), जायगीर (= जागीर) तथा बजाय ('ब-जाय' = (के) स्थान पर) अदि शब्दों की रचना होती है।

फारसी में जा का अर्थ 'स्थान' या 'जगह' के साथ-साथ 'समय' भी है। अनेक भाषाओं में ज और ग ध्वनियों का प्रयोग एवं उच्चारण-भेद बहुत स्पष्ट नहीं है, जैसे कि अंग्रेजी का जी (G) संकेत कभी ज ध्वनि के लिए प्रयुक्त होता है तो कभी ग के लिए। फारसी और अरबी में भी अनेक स्थानों पर ऐसी ही स्थिति है। उदाहरण के लिए फा. गुलनार (=अनार के फूल) अरबी में गुलनार रूप में भी प्रयुक्त होता है और जुलनार रूप में भी। इसी आधार पर फारसी में जा का एक रूप गाह भी है जो 'समय' और 'स्थान' के साथ-साथ 'राज सिंहासन' या 'स्वर्णिम आसन' का भी बोधक है, किंतु इसका प्रयोग यौगिक शब्दों में ही होता है। इसी गाह से समय-सूचक अर्थ में गाहे-बगाहे या गाह-व-गाह या गाह-गाह (यदा-कदा, कभी-कभार, समय-समय पर, कई बार) आदि शब्द बनते हैं। स्थान बोधक शब्दों में इससे निर्मित सैरगाह, आरामगाह, दरगाह तथा ऊपर लिखित जायगाह आदि शब्द लिए जा सकते हैं।

हिप-हॉप हिन्दी

हिंदी बोलने वाले लोग भाषाओं के बीच स्विच करने में बहुत सहज हो गए हैं, एक ऐसी प्रथा जिसने इसी तरह के मेल्डिंग में मदद की, जिसने हिंदी हिप-हॉप के उदय को प्रेरित किया।

हिप हॉप या हिप-हॉप, जिसे रैप के रूप में भी जाना जाता है, लोकप्रिय संगीत की एक शैली है जो 1970 के दशक की शुरुआत में अफ्रीकी अमेरिकियों द्वारा न्यूयॉर्क शहर के ब्रोंक्स बोरो में उत्पन्न हुई थी।

अपना टाईम आयेगा

हिप हॉप की उत्पत्ति एक मादक पदार्थ विरोधी और हिंसा विरोधी शैली के रूप में हुई, जिसमें शैलीबद्ध लयबद्ध संगीत (आमतौर पर ड्रम बीट्स के आसपास बनाया जाता है) होता है जो आमतौर पर रैपिंग के साथ होता है, एक लयबद्ध और तुकबंदी वाला भाषण जिसका जाप किया जाता है।

वे शब्द जो हिन्दी के नहीं (अगले पृष्ठ पर)

क्या हिप-हॉप सही है?

लेकिन आम तौर पर एक नई हिप-हॉप भाषा की मान्यता एक अच्छा अनुस्मारक है कि भाषा एक लगातार विकसित होने वाली सांस्कृतिक रचना है। जैविक प्रजातियों की तरह, भाषाएँ समय के साथ बदलती हैं और कभी-कभी अलग हो जाती हैं, जिसके परिणामस्वरूप नई बोलियों या नई भाषाओं का निर्माण होता है।

और जैसा कि जीव विज्ञान में, जहां एक "नई" या विभिन्न प्रजातियों का गठन करने का सवाल कुछ हद तक परेशान कर सकता है, हम पूछ सकते हैं: क्या कुछ "नई" या अलग भाषा बनाता है? किसी चीज़ के लिए एक नई भाषा बनने के लिए और मूल पर एक मामूली संस्करण नहीं होने के लिए कितना बदलाव पर्याप्त है?

औरत शब्द की जगह स्त्री का करें प्रयोग

छोटे अ से अनार बड़े आ से आम, छोटी इ से इमली, बड़ी ई से ईख, छोटे ओ से ओखली और बड़े औ से औरत, जी हां हम बचपन से ही पढ़ते आ रहे है और आज भी स्कूलों में यही पढ़ाया जा रहा है। औरत शब्द हिन्दी में फारसी, अरबी से आया। अरबी में औराह या औरत का अर्थ होता है महिला का गुप्तांग। औरत शब्द की जगह हमें स्त्री का प्रयोग करना चाहिए।

मेडिकल से लेकर इंजिनियरिंग तक की पढ़ाई अब हिंदी में कराई जा रही हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हम और आप हर रोज कई ऐसे शब्द का इस्तेमाल करते हैं, जिनका हिंदी से दूर-दूर तक कोई नाता नहीं है। हालांकि, ये शब्द पहले से हमारे यहां नहीं थे, ये कहीं और से हिंदुस्तान में आए और फिर हिंदी के कुछ शब्दों को धीरे-धीरे खा गए. आज हम आपको ऐसे ही 10 शब्दों के बारे में बताएंगे जिन्हें हम हर रोज हिंदा का समझ के इस्तेमाल तो करते हैं, लेकिन वह असलियत में हिंदी के शब्द नहीं हैं।

• **अनार**

अनार जो सेहत के लिए बेहद फायदेमंद है. कहते हैं अगर हर रोज इसका सेवन किया जाए तो आप कई गंभीर रोगों से दूर रहेंगे। यहां तक की इस पर कई तरह की कहावतें भी बनीं हैं। एक अनार सौ बीमार किसने नहीं सुना होगा. सुर्ख लाल रंग का यह फल, जिसे हम हिंदी समझ कर अनार बोलते फिरते हैं, वह हिंदी नहीं है। अनार फल को हिंदी में दाड़िम कहा जाता है। लेकिन आज अनार बेचने वाले को भी नहीं पता होगा कि आखिर अनार को हिंदी में कहते क्या हैं।

• **नमक**

नमक खाने में स्वाद ला देता है। अगर किसी खाने में यह सफेद नमक कम हो जाए तो उसका स्वाद बेहद फीका पड़ जाता है। समुद्र से निकलने वाले इस नमक को हिंदी में लवण कहा जाता है। जबकि, इसे फारसी में नमक शब्द मिला। जब आक्रांताओं के आगमन के बाद देश में फारसी भाषा का चलन बढ़ा तब जा कर कहीं भारतीयों नें लवण की जगह नमक बोलना शुरू किया। आज बेहद कम लोग ही बचे हैं, जिन्हें पता होगा कि नमक को हिंदी में लवण कहते हैं।

• **आदमी**

आदमी शब्द का इस्तेमाल हर रोज़ हम करते हैं। कई बार आप बोलते हैं कि ये 'आदमी' अच्छा है ये 'आदमी' खराब है, लेकिन क्या आप जानते हैं कि आदमी शब्द हिंदी का शब्द नहीं है, बल्कि यह एक फारसी शब्द है। हिंदी में इस शब्द का अर्थ मानव होता है. हालांकि, अब कितने लोग हैं जो मानव शब्द का इस्तेमाल करते हैं।

• **सिगरेट**

लाखों-करोड़ों सिगरेट भारत में हर रोज बिकते हैं। खरीदने वाले भी इसे हिंदी में सिगरेट कह कर ही खरीदते हैं। लेकिन यह हिंदी का शब्द नहीं है, यह अंग्रेजी का शब्द है। हिंदी में इसे धूम्रपान शलाका कहते हैं. हालांकि, सिगरेट पीना सेहत के लिए हानिकारक होता है।

• **चश्मा**

चश्मा यह एक ऐसा शब्द है जिसे आप हर रोज सुनते हैं। आपके घर में कई लोग चश्मा पहनते होंगे, कोई धूप का चश्मा पहनता है, तो कोई नज़र का. हिंदी बोलने वाले भी हर बार चश्मा शब्द का ही प्रयोग करते हैं। हालांकि, हिंदी में इसे चक्षु यंत्र कहा जाता है। चश्मा शब्द फारसी का शब्द है, लेकिन आज भारत में इस शब्द को खूब इस्तेमाल किया जाता है।

“

विद्वानों की संगति से मूर्ख भी विद्वान् बन जाता है जैसे निर्मली के बीज से मटमैला पानी स्वच्छ हो जाता है।

- महाकवि कालिदास

”

भर्तृहरि ने व्याकरण और भाषाविज्ञान दोनों ही क्षेत्र में अभूतपूर्ण योगदान दिए हैं। त्रिपदी टीका एवं वाक्यपदीय में व्यक्त धारणाओं एवं विवेचन को, व्याकरण संबंधी सामान्य धारणा से पृथक करके, महाभाष्य की पृष्ठभूमि पर समझने का प्रयास करना चाहिए।

1. वाक्: अभिव्यक्ति का माध्यम -
भर्तृहरि के अनुसार यदि वाणी का भाषा रूप या भाषिक रूप न रहे, तो समस्त ज्ञान-विज्ञान ही नहीं, मानव की समस्त चेतन प्रक्रिया तक अर्थहीन हो जाएगी।

2. भाषा की परिभाषा:-
प्रयोक्ता (वक्ता) और ग्रहीता (श्रोता) के बीच अभिप्राय या आदान-प्रदान केवल शब्द के ही माध्यम से होता है। ज्यों ही प्रयोक्ता का बुद्धयर्थ बन जाता है, भाषा या शब्द का कार्य पूरा करता है।

3. भाषा का ज्ञानार्जन:-
भाषा सीखते समय बालक जो अशुध्द उच्चारण करता है, उसका दर्थ विनिश्चय उसके मूल शब्द के द्वारा किया जाता है।

4. भाषा:संस्कृत और प्राकृत रूप:-
भाषा विकास के संबंध में प्रमुखतः दो मत हैं: "अनित्यवाद एवं नित्यवाद। नित्यवाद के अनुसार भाषा दैवी या देव प्रदत्त है और उसे जन प्रचलित नए नए प्रयोग के द्वारा व्यतिकीर्ण होता है। अनित्यवाद के अनुसार जनता में प्रचलित होने वाला रूप ही मूल होता है।

5. साधु-असाधु प्रयोग:-
साधु या व्याकरण सम्मत शब्द वह है जो शिष्ट प्रयोग का विषय हो तथा आगम अर्थात शास्त्रादि में धर्मादि साधन के लिए व्यवहृत होता हो। आगम का अर्थ परंपरा से अविच्छिन्न उपदेश अर्थात श्रुतिस्मृति लक्षण ज्ञान हैं धर्म का विधान उन्ही श्रुतियों में किया है। श्रुति को अकर्तृक, अनादि और अविच्छिन्न माना है।

6. अपभ्रंश या लोकभाषा का महत्व:-
जिस प्रकार श्रुति के अविच्छिन्न होने से उसमें प्रयुक्त शब्द नित्य होते हैं, उसी प्रकार अर्थ को वहन करने एवं जन प्रयोग होने के कारण असाधु या अपभ्रंश शब्द भी अव्यवच्छेय होते हैं।

(अगले पृष्ठ पर.....)

7. व्याकरण का प्रयोजन और क्षेत्र-

व्याकरण का प्रयोजन किसी नवीन या कृत्रिम भाषा का निर्माण नहीं है, बल्कि जनप्रयोग किसी शिष्ट प्रयोगाकूल शब्दों का साधुत्व विधान है ताकि उन शब्दों का प्रचलन एवं अनुकरण अधिकाधिक एवं उचित रूप में हो सके। आगम और श्रुति के नित्य एवं परंपरागत रूप में अविच्छिन्न होने के कारण साधु प्रयोग भी नित्य एवं विहित प्रयोगों पर आश्रित होता है। इसी कारण व्याकरण भी एक स्मृति ही है। इस व्याकरण का क्षेत्र केवल "वैखरी" या उच्चरित वाक् तक ही सीमित नहीं है, प्रत्युत "मव्यमा और पश्यंती" भी इसी के क्षेत्र में आती हैं।

8. शब्दब्रह्म-

मानव अभिव्यक्ति का एकमात्र माध्यम होने के वाक् या शब्द नित्य है, इसकी अर्थभावना से ही जागतिक प्रकिया चल पाती है।

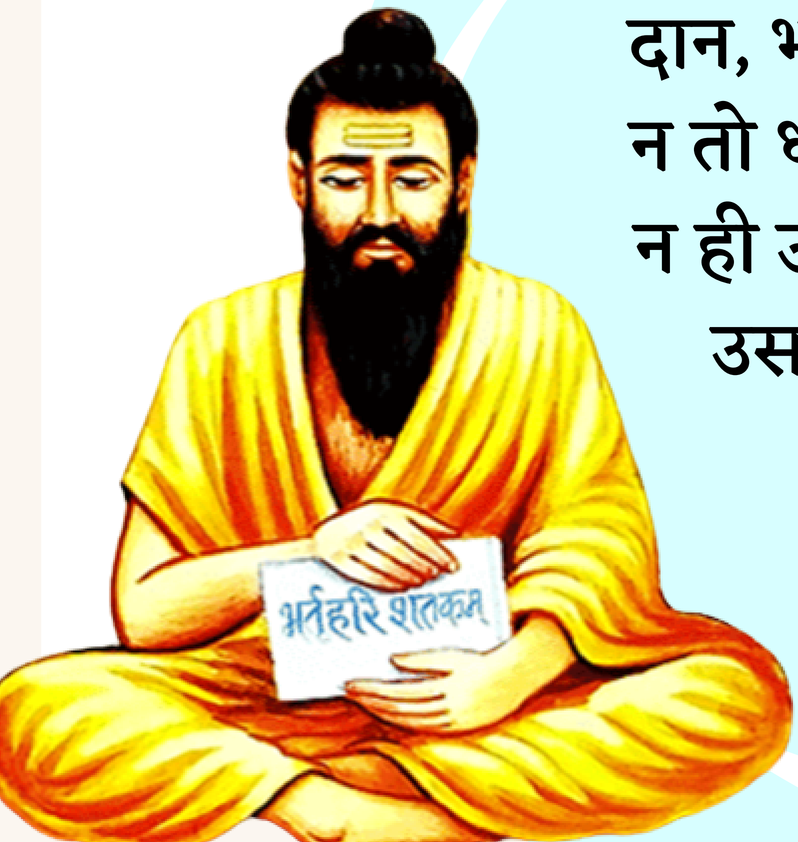

"धन की तीन गति होती हैं-
दान, भोग और नाश.. लेकिन जो न तो धन को दान में देता है और न ही उस धन का भोग करता है, उसके धन की तीसरी गति निश्चित है......

- योगीराज भर्तहरि"

डोगरी भाषा के विषय में

इसकी अपनी लिपि है, जिसे डोगरा अख्खर या डोगरे कहते हैं। इस लिपि में लिखी गई डोगरी, महाराजा रणवीर सिंह (1857-1885) के शासनकाल में जम्मू-कश्मीर की राजभाषा थी, लेकिन नई पीढ़ी ने डोगरी के लिए नागरी लिपि को अपना लिया। लगभग सम्पूर्ण आधुनिक साहित्य की रचना देवनागरी लिपि में ही हुई है और अब भी इसी का उपयोग हो रहा है। डोगरी भाषा को जम्मू-कश्मीर राज्य के संविधान की मान्यता प्राप्त है और इसे विद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर पर भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है।

डोगरी भाषी क्षेत्र (तीन प्रमुख):-

- भूखण्ड कांडी जम्मू प्रान्त के जम्मू, कठुवा और ऊधमपुर ज़िले के बलुई, पथरीले और शुष्क क्षेत्र,
- पहाड़ी हिमाचल प्रदेश राज्य में कठुवा, चंबा व कांगड़ा का पर्वतीय क्षेत्र तथा
- मैदानी और नदीय क्षेत्र, जिसमें जम्मू के दक्षिणी क्षेत्र, पंजाब के गुरदासपुर और होशियारपुर के उत्तरी क्षेत्र और पाकिस्तान के सियालकोट तथा शकरगढ़ क्षेत्र शामिल हैं।

ये क्षेत्र बोली में अन्तर को प्रदर्शित करते हैं, लेकिन यह देखा गया है कि पश्चिमी पंजाब और पाकिस्तान में डोगरी, कियुंथाली, कंडयाली, भटियाली, सिरमौरी, बगहाती, कुल्लुई, मंडयाली, चंबयाली, कुलहुरी, भदरवाही, गुजरी, रामपुरी, पोगाली, होशियारपुरी-पहाड़ी और लहंदा बोलियाँ बोली जाती हैं। 1981 की भारत की जनगणना के अनुसार डोगरीभाषी लोगों की जनसंख्या लगभग 15 लाख है, एवं 2011 की जनगणना के अनुसार यह संख्या 25 लाख से अधिक है।

भारत महान

भारत शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। भा और रत भा अर्थात् ज्ञान रूपी प्रकाश और रत अर्थात् लगा हुआ, अतः भारत का अर्थ हुआ वह भूमि जिसके निवासी ज्ञान की खोज में लगे हुए हों ।

नामकरण

प्रवंदित

(स्त्रीलिंग: प्रवंदिता)

“प्रकृष्ट रूप से स्तुत अथवा नमस्कृत”। गरुडपुराण में प्राप्त विष्णुसहस्रनाम में ७६९वाँ नाम है ” प्रणवेन प्रवन्दितः ”। स्त्रीलिङ्ग रूपः प्रवन्दिता । बगलाष्टोत्तरशतनाम में ५१ वाँ नाम है ” नागराज - प्रवन्दिता”।

(नामकरण)

साभार: श्री नित्यानंद मिश्र रचित 'सुनाम-सरित्' से

महाज्ञानी पाणिनी

पाणिनी मुनि अपने व्याकरण 'अष्टाध्यायी" अथवा 'पाणिनीय अष्टक' के लिये प्रसिद्ध हैं। अब तक प्रकाशित ग्रंथों में सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ पाणिनी का ही है। पाणिनी का काल ३५० ई.पू. माना जाता है किंतु इस संबंध में प्रस्तुत सन्देह रहित नहीं है। संभवतः उनका काल ५०० ई. पूर्व या उसके बाद का था।

सूत्र साहित्य में पाणिनी कृत - 'अष्टाधायायी', 'श्रौत सूत्र', 'गृह्यसूत्र' तथा धर्मसूत्र का समावेश है। पाणिनीकृता 'अष्टाध्यायी' संस्कृत व्याकरण संबंद ग्रंथ है। इसमें श्रौत सूत्रों में पुरोहितों द्वारा सम्पादित किये जाने वाले संस्कारों का विवरण है। 'धर्मसूत्र' में परम्परागत नियम तथा विधियाँ दी गयी हैं और गृह्यसूत्रों में जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त तक की जीवन विष्यक क्रियाओं का उल्लेख है। प्रमुख सूत्रकारों में गौतम, बोधायन-आपस्तम्ब, वशिष्ठ, आश्वलायन तथा कात्यायन आदि कि गणना होती है।

पाणिनी के नाम से कमनीय पद्य केवल सूक्तियों में ही संग्रहित नहीं है, बल्कि कोश ग्रंथों में तथा अलंकार शास्रीय पुस्तकों में भी उधृत मिलते हैं। पुरातत्व वेत्ताओं में इस बात पर गहरा मतभेद है कि ये कविताएँ, वैय्याकरण पाणिनी की हैं अथवा 'पाणिनी' नामधारी किसी अन्य कवि की? डॉक्टर भाण्डारकर, पीचर्सन आदि विद्वान सब कुछ सोचने-विचारने के बाद यही सोचते हैं कि इन श्लोकों का रचियता पाणिनी वैय्याकरण पाणिनी नहीं हो सकता। इस के विपरीत डॉक्टर औफ्रेक्ट तथा डॉक्टर पिशेल की सम्मति है कि पाणिनी को केवल एक खूसट वैय्याकरम मानना बड़ी भारी भूल करना है, वह स्वयं अच्छ कवि थे। संस्कृत साहित्य की परंपरागत प्रसिद्धि पर दृष्टि डालने से ज्ञात होता है कि पाणिनी ही इन पद्यों के निःसन्दिग्ध रचयिता है। राजशेखर ने सूक्तिग्रंथों में पाणिनी को व्याकरण तथा 'जाम्बवती जय' का रचयिता माना है -

नमः पाणिनये तस्मै यस्मादाविर भूदिह।
आदौ व्याकरणं काव्यमनु जाम्बवतीजयम्।।

यह बात महत्वपूर्ण है कि पाणिनी यदा-कदा फुटकर पद्य लिखने वाले कवि नहीं थे, बल्कि संस्कृत साहित्य के सर्वप्रथम महाकाव्य लिखने का श्रेय उन्हीं को जाता है। इस महाकाव्य का नाम कहीं तो 'पाताल विजय' तो कहीं 'जाम्बवती जय' पाया जाता है।

अष्टाध्यायी में पारिभाषिक शब्दों में ऐसे अनेक शब्द हैं जो पाणिनी के बनाये हुए हैं और बहुत से ऐसे हैं जो पहले से ही प्रचलित हैं। पाणिनी ने अपने रचे शब्दों की व्याख्या की है और पहले के अनेक पारिभाषिक शब्दों की भी नयी व्याख्या कर उनके प्रयोग को विकसित किया है।

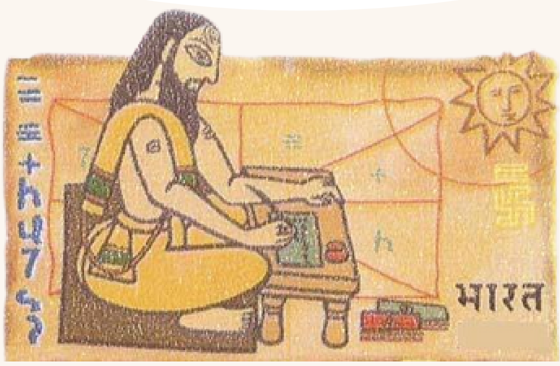

धर्मभाषाविज्ञान (Theo-Linguistics)

यह भाषाविज्ञान की वह शाखा है, जिसमें धर्म, धार्मिक विचार और व्यवहार के साथ भाषा की नातेदारी का अध्ययन किया जाता है। धर्म के क्षेत्र में यहाँ कर्मकाण्ड, धर्मोपदेश, धर्मसिद्धान्त-विषयक बयान, विश्वासों के निजी समर्थन स्वीकरण आदि आते हैं। धार्मिक भाषा की विभेदकता प्रायः भाषा के भीतर वैविध्य के विशेष समुच्चय को प्रस्तुत करती है। यहाँ विशिष्ट भाषाएँ और लिपियां भी प्राप्त होती हैं। यही नहीं, यहाँ धार्मिक भाषा के मार्ग में दार्शनिक पूछताछ पर अधिकाधिक ध्यान देने की जरूरत पड़ती है। यह भाषाविज्ञान पुराने पाठों और व्यवहारों से। उद्धृत धार्मिक भाषा का अध्ययन करता है।

भूगोलशास्त्रीय भाषाविज्ञान (Geographical Linguistics)

इसके अन्तर्गत क्षेत्रीय वितरण के आधार पर भाषा और विभाषा का अध्ययन किया जाता है। इसके लिए विभाषाविज्ञान या बोलीविज्ञान या क्षेत्रीय भाषाविज्ञान जैसे नाम भी सामान्य तौर पर प्रचलित हैं। क्षेत्रीय बोली के लिए विकल्पात्मक रूप में भूगोलशास्त्रीय भाषा या बोली का भी प्रयोग किया जाता है।

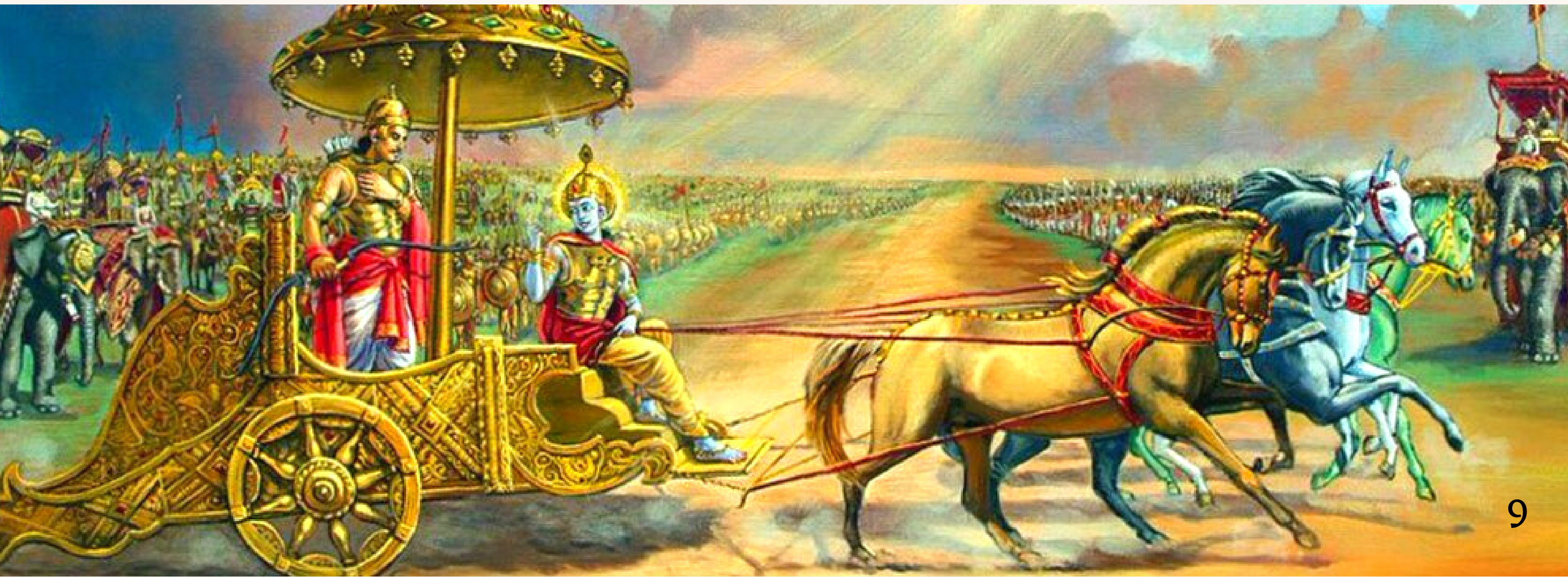

अपौरुषेय वेद

'सनातनधर्म' एवं 'भारतीय संस्कृति' का मूल आधार स्तम्भ विश्वका अति प्राचीन और सर्वप्रथम वाङ्मय 'वेद' माना गया है। मानवजातिके लौकिक (सांसारिक) तथा पारमार्थिक अभ्युदय हेतु प्राकट्य होनेसे वेदको अनादि एवं नित्य कहा गया है। अति प्राचीनकालीन महातपा पुण्यपुञ्ज ऋषियोंके पवित्रतम अन्तःकरणमें वेदके दर्शन हुए थे, अतः उसका 'वेद' नाम प्राप्त हुआ। ब्रह्मका स्वरूप 'सत् चित् आनन्द' होनेसे ब्रह्मको वेदका पर्यायवाची शब्द कहा गया है। इसीलिये वेद लौकिक एवं अलौकिक ज्ञानका साधन है। 'तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये०' - तात्पर्य यह कि कल्पके प्रारम्भमें आदिकवि ब्रह्माके हृदयमें वेदका प्राकट्य हुआ।

सुप्रसिद्ध वेदभाष्यकार महान् पण्डित सायणाचार्य अपने वेदभाष्य में लिखते हैं कि 'इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः'- अर्थात् इष्ट (इच्छित) फलकी प्राप्तिके लिये और अनिष्ट वस्तुके त्यागके लिये अलौकिक उपाय (मानव बुद्धिको अगम्य उपाय) जो ज्ञानपूर्ण ग्रन्थ सिखलाता है, समझाता है, उसको वेद कहते हैं।

निरुक्त कहता है कि 'विदन्ति जानन्ति विद्यन्ते भवन्ति०' अर्थात् जिसकी कृपासे अधिकारी मनुष्य (द्विज) सद्विद्या प्राप्त करते हैं, जिससे वे विद्वान् हो उस महाज्ञानको 'श्रुति' कहते हैं। सकते हैं, जिसके कारण वे सद्विधाके विषयमें विचार करनेके लिये समर्थ हो जाते हैं, उसे वेद कहते हैं। 'आर्यविद्या सुधाकर' नामक ग्रन्थमें कहा गया है कि वेदो नाम "वेद्यन्ते ज्ञाप्यन्ते धर्मार्थकाममोक्षा अनेनेति व्युत्पत्त्या चतुर्वर्गज्ञानसाधनभूतो ग्रन्थविशेषः॥" -अर्थात् पुरुषार्थचतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम और (मोक्ष) - विषयक सम्यक् ज्ञान होनेके लिये साधनभूत ग्रन्थविशेषको वेद कहते हैं। 'कामन्दकीय नीति' भी कहती है—'आत्मानमन्विच्छ०'।'यस्तं वेद स वेदवित्॥' अर्थात् जिस (नरपुङ्गव) को आत्मसाक्षात्कार किंवा आत्मप्रत्यभिज्ञा हो गया, उसको ही वेदका वास्तविक ज्ञान होता है। कहनेका तात्पर्य यह है की आत्मज्ञान ही पर्याय वेद है।

श्रुति भगवती बतलाती है कि 'अनन्ता वै वेदाः ॥' वेदका अर्थ है ज्ञान ज्ञान अनन्त है, अतः वेद भी अनन्त तथापि मुण्डकोपनिषद्की मान्यता है कि वेद चार हैं- ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः॥ (१) ऋग्वेद, (२) यजुर्वेद, (३) सामवेद और (४) अथर्ववेद। इन वेदोंके चार उपवेद इस प्रकार हैं-

आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वचेति ते त्रयः।
स्थापत्य वेदम परमुपवेदश्चतुर्विधः।।

उपवेदोंके कर्ताओंमें आयुर्वेदके कर्ता धन्वन्तरि, धनुर्वेदके कर्ता विश्वामित्र, गान्धर्ववेदके कर्ता नारदमुनि और स्थापत्यवेदके कर्ता विश्वकर्मा हैं।

मनुस्मृति कहती है- 'श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयः' अर्थात् वेदोंको ही श्रुति कहते हैं। 'आदिसृष्टिमारभ्याद्यपर्यन्तं ब्रह्मादिभिः सर्वाः सत्यविद्याः श्रूयन्ते सा श्रुतिः॥' अर्थात् सृष्टिके प्रारम्भसे लेकर आजतक जिसकी सहायतासे बड़े-बड़े ऋषि-मुनियोंको सत्यविद्या ज्ञात हुई, उसे श्रुति कहते हैं। 'श्रु' का अर्थ है 'सुनना', अतः 'श्रुति' माने हुआ 'सुना हुआ ज्ञान' वेदकालीन महातपा सत्पुरुषोंने समाधिमें जो महाज्ञान प्राप्त किया और जिसे जगत्के आध्यात्मिक अभ्युदयके लिये प्रकट भी किया, उस महाज्ञान को 'श्रुति' कहते हैं। श्रुति के दो विभाग हैं- (१) वैदिक और (२) तान्त्रिक- 'श्रुतिश्च द्विविधा वैदिकी तान्त्रिकी च।' मुख्य तन्त्र तीन माने गये हैं- (१) महानिर्वाण-तन्त्र, (२) नारदपाञ्चरात्र- तन्त्र और (३) कुलार्णव तन्त्र। वेदके भी दो विभाग हैं- (१) मन्त्रविभाग और (२) ब्राह्मणविभाग-'वेदो हि मन्त्रब्राह्मणभेदेन द्विविधः।' वेदके मन्त्रविभागको संहिता भी कहते हैं। संहितापरक विवेचनको 'आरण्यक' एवं संहितापरक भाष्यको ब्राह्मणग्रन्थ' कहते हैं। वेदोंके ब्राह्मणविभागमें 'आरण्यक' और 'उपनिषद्' का भी समावेश है। ब्राह्मणग्रन्थोंकी संख्या १३ है, जैसे ऋग्वेदके २, यजुर्वेदके २, सामवेदके और अथर्ववेदेके १। मुख्य ब्राह्मणग्रन्थ पाँच हैं-
(१) ऐतरेय ब्राह्मण, (२) तैत्तिरीय ब्राह्मण, (३) तलवकार ब्राह्मण, (४) शतपथ ब्राह्मण और (५) ताण्ड्य ब्राह्मण।

उपनिषदोंकी संख्या वैसे तो १०८ है, परंतु मुख्य १२ माने गये हैं, जैसे- (१) ईश, (२) केन, (३) कठ, (४) प्रश्न, (५) मुण्डक, (६) माण्डूक्य, (७) तैत्तिरीय, (८) ऐतरेय, (९) छान्दोग्य, (१०) बृहदारण्यक, (११) कौषीतकि और (१२) श्वेताश्वतर। वेद पौरुषेय (मानवनिर्मित) है या अपौरुषेय (ईश्वरप्रणीत) ? इस महत्त्वपूर्ण प्रश्नका स्पष्ट उत्तर ऋग्वेद (१। १६४। ४५) में इस प्रकार है- 'वेद' परमेश्वरके मुखसे निकला हुआ 'परावाक्' है, वह 'अनादि' एवं 'नित्य' कहा गया है। वह अपौरुषेय ही है।

इस विषयमें मनुस्मृति कहती है कि अति प्राचीन कालके ऋषियोंने उत्कट तपस्याद्वारा अपने तपः पूत हृदयमें ‘परावाक्’ वेदवाङ्मयका साक्षात्कार किया था, अतः वे मन्त्रद्रष्टा ऋषि कहलाये - 'ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः'

बृहदारण्यकोपनिषद् (२।४।१०) में उल्लेख है-'अस्य महतो भूतस्य निश्वसितमेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः।' अर्थात् उन महान् परमेश्वरके द्वारा (सृष्टि-प्राकट्य होनेके साथ ही) ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद निःश्वासकी तरह सहज ही बाहर प्रकट हुए। तात्पर्य यह है कि परमात्माका निःश्वास ही वेद है। इसके विषयमें वेदके महापण्डित सायणाचार्य अपने वेदभाष्यमें लिखते हैं-

यस्य निःश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्।
निर्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थं महेश्वरम्॥

सारांश यह कि वेद परमेश्वरका निःश्वास है, अतः परमेश्वरद्वारा ही निर्मित है। वेदसे ही समस्त जगत्का निर्माण हुआ है। इसीलिये वेदको अपौरुषेय कहा गया है। निरुक्तकार 'यास्काचार्य' भाषाशास्त्रके आद्यपण्डित माने गये हैं। उन्होंने अपने महाग्रन्थ वेदभाष्यमें स्पष्ट लिखा है कि 'वेद अनादि, नित्य एवं अपौरुषेय (ईश्वरप्रणीत) ही है।'

(शेष अगले अंक में)

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥

एक ही सतरूप परमेश्वर का विद्वज्जन विविध प्रकार से वर्णन करते हैं। उसी को (एश्वर्य सम्पन्न होने पर) इन्द्र, (हितकारी होने से) मित्र, (श्रेष्ठ होने से) वरुण तथा (प्रकाशक होने से) अग्नि कहा गया है। वास्तव में, वह (परमात्मा) सुपर्ण तथा गरुत्मान (एक) है |

(ऋग्वेद १.१६४.४६)

चिन्तया जायते दुःखं नान्यथेहेति निश्चयी।
तया हीनः सुखी शान्तः सर्वत्र गलितस्पृहः ।।

चिंता से ही दुःख उत्पन्न होते हैं किसी अन्य कारण से नहीं, ऐसा निश्चित रूप से जानने वाला, चिंता से रहित होकर सुखी, शांत और सभी इच्छाओं से मुक्त हो जाता है।

- श्री अष्टावक्र गीता 11.5

हिन्दी प्रकोष्ठ | श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय

श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय में हिन्दी प्रकोष्ठ की स्थापना का निर्णय यूजीसी के निर्देशों के अनुपालन में विश्वविद्यालय कार्यकारी परिषद् द्वारा इसकी 34वीं बैठक में 23.11.2015 को लिया गया। इसके क्रियान्वयन की अधिसूचना 15.02.2016 को निर्गत की गयी। इसके तहत दर्शन एवं संस्कृति विभाग के सहायक आचार्य डॉ० अनिल कुमार तिवारी को समन्वयक / नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया था, वर्तमान में डॉ. अमिताभ विक्रम द्विवेदी इसके द्वितीय नोडल अधिकारी हैं। हिन्दी प्रकोष्ठ के निम्नलिखित उद्देश्य और दायित्व निर्धारित किए गए:

1. कार्यालय और विद्यार्थियों से संबंधित सूचनाओं को हिन्दी माध्यम से करने को बढ़ावा देना,
2. विद्यार्थियों को हिंदी में सीखने और बातचीत करने के लिए तथा राष्ट्रीय स्तर की वाद-विवाद /भाषण, निबंध लेखन आदि प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना,
3. पुस्तकालय में सामान्य अभिरुचि पठन अनुभाग के लिए महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध हिंदी पुस्तकें / साहित्य और हिंदी पत्र-पत्रिकाओं को खरीदना और सदस्यता लेना,
4. समाचार पत्र, छात्र पत्रिका आदि जैसे संस्थागत प्रकाशनों में हिंदी लेखों का प्रकाशन,
5. हिन्दी में संगोष्ठी / वाद-विवाद / लोकप्रिय व्याख्यान आदि आयोजित करना,
6. हिंदी में अनुवाद, ऑनलाइन सामग्री का निर्माण आदि को प्रोत्साहित करें, नाटक, नुक्कड़ नाटक, एकांकी आदि जैसे थिएटर कार्यक्रमों का आयोजन,
7. चर्चा करें और गतिविधियों का एक कैलेंडर तैयार करना और पुरस्कारों का प्रस्ताव भी देना,
8. हिंदी के प्रचार के लिए किसी अन्य स्वीकृत गतिविधि का क्रियान्वयन करना।

हिन्दी प्रकोष्ठ में छात्र सचिव की भी अहम भूमिका है जो हिन्दी प्रकोष्ठ के सभी कार्यों का क्रियान्वन नोडल अधिकारी के मार्गदर्शन में करता है। वर्तमान में मिलिन्द शुक्ल छात्र सचिव के रूप में कार्यरत हैं।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।

अंग्रेज़ी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषाज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।।

उन्नति पूरी है तबहिं जब घर उन्नति होय
निज शरीर उन्नति किये, रहत मूढ़ सब कोय।।

- भारतेंदु हरिश्चंद्र

योग वह विज्ञान है जिसके द्वारा हम चित्त को अनेक शक्तियों में परिवर्तित होने से रोकते हैं। जैसे समुद्र पर चंद्रमा का प्रतिबिंब लहरों से टूट जाता है या धुंधला हो जाता है, उसी प्रकार आत्मा का प्रतिबिंब, सच्चा स्व, मानसिक तरंगों से टूट जाता है। केवल जब समुद्र को दर्पण जैसी शांति में शांत किया जाता है, तो चंद्रमा का प्रतिबिंब देखा जा सकता है, और केवल जब "मन-वस्तु", चित्त को पूर्ण शांति पर नियंत्रित किया जाता है, तो स्वयं को पहचाना जा सकता है।

- स्वामी विवेकानंद

कः कालः कानि मित्राणि को देशः कौ व्ययागमौ।
कश्चाहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः॥

सही समय, सही मित्र, सही स्थान, धनार्जन के सही साधन, धन व्यय करने के सही मार्ग और अपने ऊर्जा स्रोत पर विचार अवश्य करें, भविष्य में यही काम आएंगे।

(चाणक्य नीति)

• माँ सरस्वती की प्राचीन प्रतिमा (10-11 शताब्दी की)

© हिन्दी प्रकोष्ठ (श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय)